'उज्जैन' और 'तारा' में समानता 6 | लोहड़ी पर्व 9 | तुष्टिकरण का नया हथियार 13

राष्ट्रीय विचारों का पाक्षिक

₹10

पाथेय कण

www.patheykan.com

मार्गशीर्ष शुक्ल 4, वि.2080,युगाब्द 5125, 16 दिसम्बर, 2023

'हिन्दुइज्म' नहीं, 'हिन्दुत्व'

विश्व के हिन्दुओं से संगठित होने का आह्वान

WORLD HINDU CONGRESS 2023

patheykan@gmail.com

अभूतपूर्व जानकारी

पाथेय कण के समस्त अंक अभूतपूर्व जानकारी से परिपूर्ण होते हैं। पत्रिका का लम्बे समय से नियमित पाठक हूं। 1 अक्टूबर के अंक में जगतगुरु आद्य शंकराचार्य जी से संबंधित जानकारी ज्ञानवर्धक लगी। सनातन धर्म की पहचान कराने में पाथेय कण के प्रयास सराहनीय हैं।

▪ **डॉ.कमल थवानी**,कोटा

सार्थक संपादकीय

1 से 15 दिसम्बर के अंक में 'हवाई अड्डे पर भारतीय साहित्य' शीर्षक से लिखा संपादकीय सार्थक भी है और सामयिक भी। यदि एनडीए सरकार को छोड़ दें तो 2014 से पहले की तो किसी भी सरकार से ऐसी उम्मीद करना ही बेमानी होता लेकिन गत एक दशक से जो राष्ट्रवादी सरकार है उससे तो ऐसी उम्मीद की ही जा सकती है। यदि संपादकीय में उठाए गए मुद्दे पर अमल किया जाता है तो निश्चित रूप से वह भारतीय साहित्य के उन्नयन की दिशा में एक सार्थक कदम होगा। संपादकीय के अंत में लिखा भारतेंदु हरिश्चंद्र का कथन संपादकीय को और ज्यादा वजनदार बनाता है।

▪ ***मुकेश पारीक***, *डूंडलोद (झुंझुनूं)*

संपादकीय

1 दिसम्बर अंक के संपादकीय में हवाई अड्डे पर भारतीय भाषा की पुस्तक नहीं मिलने की जानकारी से मन व्यथित हुआ। स्वामी श्रद्धानन्द जी के विषय में जानकारी रोचक और ज्ञानवर्धक लगी। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र द्वारा घर-घर चावल पहुंचाने की योजना प्रेरणादायी है।

▪ **नीरज सिंह भागवतपक**, सवाईमाधोपुर

पाठक मिलन

पाथेय कण के पाठकों से आपसी संवाद, विचार-विमर्श व सुझाव हेतु आयोजित किए जाने वाले पाठक मिलन जयपुर प्रांत में आगामी 23 से 31 जनवरी 2024 के मध्य होंगे। पाठक-मिलन खण्ड (तहसील) स्तर पर करने की योजना बनी है। पाठकों से आग्रह है कि इस दौरान अपने सुझाव अवश्य दें ताकि पाथेय कण को अधिक रुचिकर और पठनीय बनाया जा सके।

पाथेय कण पोर्टल पर पढ़ें

(दिए गए लिंक पर क्लिक करें)

- **मृदा प्रदूषण एक वैश्विक चुनौती**
  https://patheykan.com/?p=23112
- **भारतीय अर्थबोध में स्वत्व बोध...**
  https://patheykan.com/?p=23016
- **काउंसलिंग से कंट्रोल हो सकता...**
  https://patheykan.com/?p=22134

पाक्षिक
पाथेय कण
मार्गशीर्ष शुक्ल 4 से
पौष कृष्ण 4 तक
वि. सं. 2080, यु. 5125
16-31 दिसम्बर, 2023
वर्ष : 39 अंक : 15

सम्पादक
रामस्वरूप अग्रवाल

सह सम्पादक
मनोज गर्ग

सम्पादन सहयोगी
हेमलता चतुर्वेदी

प्रबंध सम्पादक
ओमप्रकाश

सह प्रबंध सम्पादक
श्याम सिंह

अक्षर संयोजन
कौशल रावत

सहयोग राशि
एक वर्ष 150/-
पन्द्रह वर्ष 1500/-

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन'
4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-17 (राजस्थान)

पाथेय कण प्राप्त नहीं होने पर संपर्क करें-
WhatsApp 79765 82011
Mobile No. 94136 45211
99297 22111

पाथेय कण प्राप्त करने के लिए सहयोग राशि Paytm से Mob.No. 7976582011 पर भेजें

E-mail
patheykan@gmail.com
Website
www.patheykan.in

बदला जाना मिजोरम में मतगणना तिथि का

मिजोरम में मतगणना पूर्व घोषित तारीख 3 दिसम्बर को नहीं कराई गई। चुनाव आयोग ने वहां के राजनीतिक दलों, 15 प्रमुख चर्चों, एनजीओ आदि की मांग पर मतगणना तिथि बदलकर 4 दिसम्बर कर दी। ऊपरी तौर पर यह एक सामान्य घटना ही कही जाएगी। परंतु इसके निहितार्थ बहुत गहरे हैं।

3 दिसम्बर को मिजोरम में कोई त्योहार नहीं था। कोई बड़ा कार्यक्रम नहीं था। 3 दिसम्बर को था रविवार। कहा गया कि ईसाई समुदाय को रविवार के दिन चर्च में जाना होता है, इसलिए रविवार को मतगणना न की जाए। मिजोरम में इस हेतु आंदोलन चलाया गया। प्रार्थनाएं की गई। 15 प्रमुख चर्चों द्वारा 26 नवम्बर (रविवार) को इस कार्य के लिए 'गॉड' से भी मदद मांगी गई। आयोग का मानना था कि मतगणना में आम लोग शामिल नहीं होते हैं। उस दिन वे अपनी इच्छानुसार कार्य (चर्च में प्रार्थना व सेवा कार्य आदि) करने के लिए स्वतंत्र हैं। परंतु बाद में सभी क्षेत्रों से आए दबाव के कारण चुनाव आयोग तारीख बदलने के लिए तैयार हुआ।

15 चर्चों के संगठन 'मिजोरम कोहरान हरुएतुते समिति' के अध्यक्ष चौंगमिंगथांगा ने इस पर खुशी जताते हुए कहा, ''हम इसे (मतगणना तिथि बदलने को) गॉड का हस्तक्षेप मानते हैं कि हमारी प्रार्थनाओं और इच्छाओं को चुनाव आयोग के माध्यम से स्वीकार कर लिया गया।'' गैर सरकारी संस्थाओं की समिति के अध्यक्ष लाल हमछुआना ने कहा कि मिजोरम एक ईसाई बहुल राज्य है तथा यह विरोध मिजो समुदाय और उनके धर्म की रक्षा के अलावा और कुछ नहीं है।

क्या मिजोरम हमेशा से ही ईसाई बहुल राज्य था? विभिन्न मतगणनाओं के आंकड़े बताते हैं कि सन् 1901 तक संपूर्ण लुशाई-पहाड़ी क्षेत्र (जो बाद में मिजोरम बना) में हिन्दू जनजातियां रहती थीं और मात्र 45 (पैंतालीस) ईसाई थे, वहां की पूरी आबादी के आधा प्रतिशत (0.50 प्रतिशत)। ईसाइयों की आबादी बढ़कर 10 वर्ष पश्चात् भी मात्र दो हजार 461 यानी 2.70 प्रतिशत ही हुई थी, जो 1931 में बढ़कर 47.52 प्रतिशत हो गई। स्वाधीनता पूर्व की अंग्रेज-सरकार ने भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में हिंदुओं के ईसाई रिलीजन में मतांतरण को बढ़ावा दिया। वर्तमान मेघालय और मिजोरम क्षेत्र की विद्यालयी शिक्षा का जिम्मा ईसाई मिशनरियों को सौंपते हुए शिक्षा का पूरा बजट ही उन्हें सौंप दिया जाता था। देश की स्वाधीनता के आसपास के वर्षों में (1931 से 1951 के दौरान) मिजोरम में तेजी से ईसाई मतांतरण हुआ। परिणामस्वरूप 1931 में जहां ईसाई, आबादी का 47.52 प्रतिशत थे, वे 1951 तक बढ़कर 90.50 प्रतिशत हो गए। वहां बौद्धों को छोड़कर शेष हिंदू जनजातियों का पूरी तरह ईसाईकरण हो गया है। लगभग यही हाल पूर्वोत्तर के अन्य क्षेत्रों का है।

क्या ये आंकड़े हमें चौंकाते हैं? कुछ सोचने के लिए विवश करते हैं ? जब पूरे देश में स्वाधीनता के लिए आंदोलन चल रहा था, देश के सामाजिक-राजनैतिक संगठन देश को स्वतंत्र कराने के लिए संघर्षरत थे, उन्हीं दिनों आज के मिजोरम, मेघालय, नागालैंड वाले क्षेत्रों में ईसाई मिशनरीज पूरी शक्ति लगाकर हिंदुओं को ईसाई बना रही थीं। देश स्वाधीन होने के पश्चात् केन्द्र व संबंधित राज्य की कांग्रेसी सरकारों ने अपनी तुष्टिकरण की राजनीति के चलते इस धार्मिक जनसांख्यिकीय बदलाव पर ध्यान नहीं दिया।

90 प्रतिशत से ज्यादा आबादी मतांतरित होकर ईसाई बन जाने पर वहां एक तरह से चर्च का शासन हो गया। राज्य में सरकार किसी भी पार्टी की बने, उसे वहां का शासन चर्च के निर्देशानुसार ही चलाना होता है। यही कारण रहा कि इस बार चुनावों के पश्चात् मतगणना के लिए जब 3 दिसम्बर (रविवार) का दिन तय हुआ तो यह बात चर्च को स्वीकार्य नहीं हुई तथा चुनाव आयोग को इसमें बदलाव करना पड़ा।

क्या मिजोरम में हिंदुओं के मतांतरण से उनका, एक प्रकार से, राष्ट्रांतरण नहीं हो गया? जैसे-जैसे मिजोरम में ईसाई आबादी बढ़ने लगी, वैसे-वैसे वहां अलगाववादी तत्व खड़े होने लगे और इस क्षेत्र को भारत से तोड़कर नया देश बनाने के प्रयत्न तेजी से होने लगे। ये प्रयत्न 1959 में अलगाववादी आंदोलन में परिलक्षित हुए। एक नियमित रूप से चर्च जाने वाले समर्पित ईसाई लालडेंगा के नेतृत्व में चला यह आंदोलन 1966 की फरवरी के आते-आते हिंसक संघर्ष में परिवर्तित हो गया। क्यों हुआ ऐसा? क्या इस अलगाववाद और हिंसक दौर के पीछे ईसाई मतांतरण कारण नहीं था? मिजोरम, मेघालय व नागालैंड की न केवल सदियों से चली आई उनकी अपनी पहचान ही बदल गयी, बल्कि उनका सांस्कृतिक-सामाजिक परिदृश्य भी पूरी तरह 'भारतीय पहचान' से भिन्न हो गया।

देश को भविष्य में सुरक्षित रखना है तो इन सब पर विचार करना होगा।

(रामस्वरूप अग्रवाल)

विश्व हिन्दू कांग्रेस का थाईलैंड में हुआ सम्मेलन

'हिन्दुइज्म' शब्द के स्थान पर 'हिन्दुत्व' शब्द का करें प्रयोग

विश्व भर के हिन्दुओं को संगठित होने का आह्वान

गत 24 से 26 नवम्बर तक थाईलैंड की राजधानी बैंकाक में 'विश्व हिन्दू कांग्रेस' सम्मेलन का आयोजन था। विश्व के हिन्दू संगठनों के बीच एकता को मजबूत करने तथा सनातन धर्म के विरुद्ध नफरत व पूर्वाग्रहों का प्रभावी ढंग से मुकाबला करने का संकल्प इस सम्मेलन में लिया गया।

हिन्दुइज्म नहीं, हिन्दुत्व कहें

सम्मेलन में एक महत्वपूर्ण घोषणा भी की गई (वैश्विक शब्दावली में कहा जाएगा कि एक घोषणा अपनाई गई)। इसमें 'हिन्दुवाद'(Hinduism) शब्द को त्यागने के लिए कहा गया है। इसके स्थान पर 'हिन्दू धर्म' और 'हिन्दुत्व' शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए। हिन्दुवाद (हिन्दुइज्म) शब्द त्यागने के पीछे तर्क दिया गया है कि यह शब्द दमन और भेदभाव को दर्शाता है। इसके स्थान पर 'हिन्दुत्व' शब्द ज्यादा उपयुक्त है क्योंकि इसमें हिन्दू शब्द के सभी अर्थ शामिल हैं। ('वाद' या 'इज्म' शब्द के प्रयोग की शुरुआत 19वीं सदी के मध्य अमेरिका में हुई थी। इसका प्रयोग किसी आंदोलन को अपमानजनक तरीके से संबोधित करने के लिए किया गया था।)

घोषणा में कहा गया है कि 'हिन्दू' शब्द उन सभी को दर्शाता है जो सनातन या शाश्वत है। साथ ही, हिन्दुत्व का सीधा सा अर्थ 'हिन्दुपन' (Hinduness) से है। कई लोग 'सनातन धर्म' या 'सनातन' का उपयोग करते हैं। 'सनातन' शब्द हिन्दू धर्म की शाश्वत प्रकृति को इंगित करने वाला है।

अज्ञानता व पूर्वाग्रहों के कारण हिंदुत्व का विरोध

घोषणा में यह भी कहा गया है कि कई शिक्षाविद् व बुद्धिजीवी अज्ञानतावश हिन्दुत्व को हिन्दू धर्म के विपरीत चित्रित करते हैं। कई लोग हिन्दू धर्म के प्रति अपनी गहरी नफरत व पूर्वाग्रहों के कारण भी हिन्दुत्व विरोधी हैं। डीएमके पार्टी के एक नेता के सनातन विरोधी वक्तव्य के संदर्भ में घोषणा पत्र में उल्लेख किया गया कि कई राजनेता भी राजनीतिक एजेंडे व व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों के कारण इस हिन्दुत्व विरोधी समूह में शामिल हो गए हैं तथा सनातन की आलोचना कर रहे हैं।

विश्वभर के हिन्दू हों संगठित

विश्व हिंदू कांग्रेस ने हिन्दू धर्म पर हो रहे ऐसे हमलों की निंदा की है तथा विश्व भर के हिन्दुओं से एकजुट होने का आग्रह किया है।

61 देशों से आए लोग

इस सम्मेलन में 61 देशों के 2200 से अधिक प्रतिनिधियों ने सहभागिता की। उद्घाटन सत्र में संत माता अमृतानंदमयी, भारत सेवाश्रम संघ के स्वामी पूर्णात्मानंद, सरसंघचालक डॉ. मोहनराव भागवत, सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले, विहिप के महामंत्री श्री मिलिंद परांडे, सतगुरु बोधिनाथ वेयलानस्वामी सहित लगभग 30 देशों के कई सांसद एवं मंत्री शामिल हुए।

थाईलैंड के प्रधानमंत्री ने भेजा संदेश- मेजबानी सम्मान की बात, विश्व में शांति हिन्दू मूल्यों से ही

समारोह में थाईलैंड के प्रधानमंत्री श्री श्रेथा थाविसिन आने वाले थे, लेकिन किन्हीं अपरिहार्य कारणों से नहीं आ पाए। उनके द्वारा भेजे गए संदेश को समारोह में पढ़ा गया। उन्होंने अपने संदेश में हिन्दू मूल्यों की वकालत करते हुए कहा कि अशांति से लड़ रही दुनिया को अहिंसा, सत्य, सहिष्णुता व सद्भाव जैसे हिन्दू मूल्यों से प्रेरणा लेनी चाहिए, तभी विश्व में शांति स्थापित होगी। उन्होंने कहा कि विश्व हिंदू कांग्रेस की मेजबानी करना थाईलैंड के लिए सम्मान की बात है।

हिन्दुओं को विश्व में अपनी पहचान बनानी होगी

विश्व हिंदू कांग्रेस के संस्थापक, वैश्विक अध्यक्ष तथा सम्मेलन के सूत्रधार स्वामी विज्ञानानंद ने इस अवसर पर कहा कि आज विश्व में हिन्दुओं को अपनी पहचान बनानी है तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करनी है तो मुख्य पहलुओं पर फोकस करना होगा। ये पहलू हैं- इकोनॉमी, एज्युकेशन, मीडिया और

पॉलिटिक्स। बैंकाक में हुए विश्व हिन्दू कांग्रेस के इस सम्मेलन में इन पर विचार-विमर्श किया गया।

राजनीतिक फोरम की बैठक में विभिन्न देशों में निर्वाचित व अन्य नेताओं की एकजुटता पर जोर दिया गया। कहा गया कि जहां हिन्दू हैं, वहीं डेमोक्रेसी (प्रजातंत्र) फलता-फूलता है। हिन्दू जहां भी जाते हैं, अपने मूल्य साथ लेकर जाते हैं।

आर्थिक फोरम में युवाओं के स्टार्टअप के 30 प्रस्ताव विचारार्थ रखे गए। अगले वर्ष सितम्बर में विश्व हिंदू आर्थिक फोरम का आयोजन मुम्बई में होगा।

खुशी व संतुष्टि का मार्ग भारत दिखाएगा

विश्व हिन्दू कांग्रेस के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए सरसंघचालक मोहन भागवत ने कहा कि भारत दुनिया को खुशी और संतुष्टि का रास्ता दिखाएगा जो भौतिकवाद, साम्यवाद और पूंजीवाद के प्रयोगों से लड़खड़ा रही है। उन्होंने दुनिया भर के हिंदुओं से एक-दूसरे तक पहुंचने और एक साथ दुनिया से जुड़ने की अपील की। भागवत ने विचारकों की बैठक में कहा,'' हमें हर हिन्दू तक पहुंचना है, उससे जुड़ना है। हिन्दू मिलकर दुनिया में हर किसी को जोड़ेंगे। जैसे-जैसे हिन्दू अधिक संख्या में जुड़े हैं, दुनिया से जुड़ने की प्रक्रिया भी शुरु हो गई है।'' ■ (राम)

राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम

राम मंदिर के एक लाख मॉडल तैयार,शादियों में बंटेंगे

प्रयागराज में राम मंदिर के एक लाख मॉडल तैयार किए जा रहे हैं। राम मंदिर के मॉडल को लोग अपने घर में रखेंगे और शादियों में उपहार के तौर पर देंगे। राम मंदिर का यह मॉडल हूबहू अयोध्या राम मंदिर की तरह बनाया गया है, जिसके ऑर्डर लगातार आते जा रहे हैं। बढ़ती मांग को देखते हुए कुछ मॉडल बनारस और गोरखपुर से भी बनवाए जा रहे हैं। मंदिर के मॉडल ऑनलाइन भी उपलब्ध हैं। राम मंदिर का यह मॉडल प्लाईवुड से बना है।

राजस्थान के 40 हजार गांव-बस्तियों में घर-घर पीले चावल से न्यौता

22 जनवरी को रामलला प्राण-प्रतिष्ठा समारोह के लिए राजस्थान प्रदेश के 36 हजार गांवों व 4 हजार शहरी बस्तियों में घर-घर पीले चावल पहुँचाकर न्यौता दिया जाएगा कि वे अपने मुहल्लों-गांव व बस्ती के मंदिर पर एकत्र होकर अयोध्या में हो रहे 'रामलला प्राण प्रतिष्ठा' समारोह के साक्षी बनें। इसके लिए मंदिरों में बड़े स्क्रीन (पर्दे) की व्यवस्था करने को कहा गया है। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के समारोह का सीधा प्रसारण डी.डी. टीवी चैनल द्वारा किया जाएगा। मंदिरों में इस दिन (22 जनवरी, 2024)को हनुमान चालीसा, सुंदरकांड, अखंड रामायण, विजयमंत्र (श्रीराम जय राम जय जय राम) आदि करते हुए महाआरती संपन्न की जाएगी तथा राम महोत्सव मनाया जाएगा। प्रसाद वितरण होगा। विश्व हिंदू परिषद की ओर से आह्वान किया गया है कि इस दिन प्रत्येक हिंदू घर में कम से कम 5 दीपक जलाए जावें।

राजस्थान प्रदेश में राम महोत्सव के लिए न्यौता देने हेतु 51 क्विंटल पीले चावलों की व्यवस्था की गई है।

सरयू नदी पर बनेगा पंचवटी द्वीप

सरयू नदी के गुप्तार घाट पर पंचवटी द्वीप और राम अनुभव केंद्र बनाया जाएगा। पंचवटी द्वीप पर 75 एकड़ में राम अनुभव केंद्र, राम वन गमन पथ, श्रीराम और रामायण की प्रासंगिकता, कल्पवास एवं वैदिक ग्राम, अमृत भोजन प्रसाद, योगग्राम, जैविक कृषि, तरुताल वैदिक विद्यालय और खेल प्रशिक्षण केंद्र बनाए जाएंगे।

राजस्थान के इकबाल सक्का की बनाई स्वर्ण पादुका पहनेंगे रामलला

उदयपुर के शिल्पकार इकबाल सक्का ने अयोध्या में बन रहे राम मंदिर में स्थापित की जाने वाली रामलला की प्रतिमा के लिए खास तरह की चरण पादुकाएं बनाई हैं, जिन्हें अयोध्या भेजा जाएगा। सक्का ने श्रीराम मंदिर के लिए सोने की विशेष कलाकृतियां बनाई हैं। इनमें मुख्य रूप से सोने की ईंट शामिल है, जिस पर उन्होंने 'राम' लिखा है।

महाकाल की नगरी 'उज्जैन' और आयरलैंड की नगरी 'तारा' में अद्भुत समानताएं

▪ मेजर सुरेन्द्र नारायण माथुर
एस.एम.(से.नि.)

महाकाल की नगरी उज्जैन तथा आयरलैंड की नगरी तारा में कई अद्भुत समानताएं हैं। आयरलैंड में तारा स्थान हूबहू उज्जैन से मेल खाता दिखाई देता है।

उज्जैन की महत्ता

उज्जैन भारत के मध्य प्रदेश राज्य का एक प्रमुख शहर है। उज्जैन मंदिरों की नगरी है। पुण्य सलिला क्षिप्रा के दाहिने तट पर बसे इस नगर को भारत की मोक्षदायक सप्तपुरियों में एक माना गया है। भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में एक 'महाकाल' इस नगरी में स्थित है। यहाँ हर 12 वर्ष पर सिंहस्थ महाकुंभ मेला लगता है। यह महान सम्राट विक्रमादित्य के राज्य की राजधानी थी। उनके नाम से विक्रम संवत् भारतीय उपमहाद्वीप में प्रचलित हिन्दू पंचांग है। विक्रमादित्य के उस सिंहासन के किस्से प्रसिद्ध हैं। महाकवि कालिदास सम्राट विक्रमादित्य के दरबार के नवरत्नों में से एक थे। पुराणों व महाभारत में उल्लेख आता है कि वृष्णि-वीर कृष्ण व बलराम यहाँ गुरु संदीपनी के आश्रम में विद्या प्राप्त करने हेतु आये थे। आज भी विश्व में उज्जयिनी का धार्मिक-पौराणिक एवं ऐतिहासिक महत्व के साथ ही ज्योतिष क्षेत्र का महत्व भी प्रसिद्ध है। भगवान परशुराम जी का जन्मस्थल उज्जैन के पास इंदौर में जनापाव नामक पहाड़ियां है तथा जनापाव एक सुन्दर तीर्थस्थल है। यहाँ पर उनके पिता ऋषि जमदग्नि का आश्रम था। उनका जन्म अक्षय तृतीया के दिन हुआ था। एक बहुत ही महत्वपूर्ण बिंदु यह भी है, महाकाल की नगरी उज्जैन से कर्क रेखा गुजरती है। यहाँ अनेक धार्मिक और ज्योतिष विज्ञान के ज्ञानी निवासी थे। इन्हीं कारणों से जयपुर के राजा ने जंतर-मंतर तथा एक खगोल विज्ञान प्रयोगशाला का निर्माण उज्जैन में करवाया था।

आयरलैंड 'तारा' स्थित शिवलिंग

तारा नगरी से समानताएं

आयरलैंड में स्थित तारा केल्टिक समुदाय के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। उज्जैन और तारा की समानताएँ एक अद्भुत संजोग है। लेकिन सब कुछ समान होना संजोग नहीं हो सकता है। तारा में एक विशाल शिवलिंग है जो उज्जैन के महाकाल समान है और यह केल्टिक समुदाय के लिए अति पौराणिक और पवित्र स्थान है। यहाँ पौराणिक काल में सबसे महत्वपूर्ण और विशाल द्विजों का एक आश्रम होता था जैसे भारत में ऋषि-मुनि के आश्रम होते थे। इस आश्रम का प्रभाव संपूर्ण आयरलैंड पर होता था। राजा का चयन और राज्याभिषेक और उसकी घोषणा भी यही से होती थी। यहाँ का राजा ल: (Lu',Le) कहलाता था जो इंद्र के समान माना जाता था। ल: का मतलब संस्कृत में इंद्र ही होता है। केल्टिक इतिहास में एक मशहूर नायक हुए जिनका नाम था King Arthur और उनकी लोक कथाएँ तारा से जुड़ी हुई हैं। तारा में King Arthur का सिंहासन और उज्जैन में सम्राट विक्रमादित्य की प्रचलित कथाएँ लगभग समान हैं। उज्जैन समान तारा में भी पौराणिक खगोल विज्ञान प्रयोगशाला रही है। केल्टिक के आठ प्रमुख पर्व का पंचांग यहीं से तय किया जाता है और इन आठ पर्वों पर स्थानीय द्विज उत्सव मनाने यहाँ एकत्रित होते हैं। ये आठों पर्व सनातन संस्कृति के पर्वों से मेल खाते हैं।

अगर दोनों में समानताएँ हैं तो यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी और यह भी कि ये लोग भगवान परशुराम जी के समय वहां गये लोग हैं। आयरलैंड की लोक कथाओं में यह उल्लेख हमेशा आता है कि भगवान परशुराम जी ने अक्षय तृतीया के दिन ही आयरलैंड पर विजय हासिल की थी। अक्षय तृतीया भगवान परशुराम जी का जन्मदिन है और अक्षय तृतीया के दिन सूर्य कर्क रेखा पर होता है जो उज्जैन से गुजरती है। इतनी सारी समानताएँ क्या एक संयोग हैं?

इन सभी पहलुओं का विश्लेषण करते हुए उज्जैन की महत्ता समझने में आने लगती है। क्या तारा में स्थित आश्रम और खगोल

उज्जैन नगरी

विज्ञान प्रयोगशाला का संबंध उज्जैन के विद्वानों से रहा होगा और क्या ये विद्वान, भगवान परशुराम जी के समय के गये लोग थे जो बड़े ज्ञानी रहे होंगे? क्या इन्हीं ज्ञानी विद्वानों ने तारा जाकर खगोल विज्ञान प्रयोगशाला को तारा में स्थापित किया होगा? इन समानताओं का गहराई से अध्ययन करना अति आवश्यक है। जिन विशेष बिंदुओं पर समानताओं पर आकर्षण होता है उनमें भगवान परशुराम जी, सम्राट विक्रमादित्य जैसा सिंहासन, द्विज विद्वानों का आश्रम, इंद्र का स्थान, खगोल विज्ञान प्रयोगशाला, आठ महत्वपूर्ण पर्व में समानताएँ और उज्जैन से गुजरने वाली कर्क रेखा आदि हैं। आठ में से दो ऐसे पर्व हैं जिस समय सूर्य की स्थिति कर्क रेखा पर होती है अर्थात् उज्जैन स्थित महाकाल मंदिर की महत्ता बढ़ जाती है। 1884 में, ग्रीनविच को सार्वभौमिक रूप से प्रधान मध्याह्न रेखा के रूप में स्वीकार किया गया, 0° देशांतर के लिए अंतरराष्ट्रीय मानक, जहां से पूरे विश्व के समय की गणना की जाती है। इससे पहले, उज्जैन को भारत में समय के लिए केंद्रीय मध्याह्न रेखा माना जाता था। यही कारण है कि उज्जैन को भारत का ग्रीनविच कहते है। आज भी, आप कहीं भी पैदा हुए हों, जब हिंदू पंचांग के अनुसार पंचांग या राशिफल बनाया जाता है, तो वह हमेशा उज्जैन के समय (आईएसटी से लगभग 29 मिनट पीछे) पर आधारित होता है और इससे उज्जैन की महत्ता और भी बढ़ जाती है।

अध्ययन की आवश्यकता

एक विचार मन में यह भी आता है कि क्या तारा जैसी खगोल विज्ञान प्रयोगशाला उज्जैन में भी रही होगी जिससे आठ पर्वों का आंकलन और अध्ययन करते थे? अगर यह सत्य सिद्ध हो जाता है तो वर्तमान में वह प्रयोगशाला उज्जैन में कहाँ हो सकती है और क्या उसे खोजा जा सकता है? क्या आयरलैंड का तारा स्थित शिवलिंग जो वहाँ के पौराणिक खगोल विज्ञान प्रयोगशाला का केंद्र बिंदु है, वैसा ही उज्जैन के पौराणिक खगोल विज्ञान प्रयोगशाला का केंद्र बिंदु महाकाल मंदिर रहा होगा?

इसका निर्णय संपूर्ण अध्ययन के बाद ही लिया जा सकता है। इसीलिए तारा और उज्जैन का तुलनात्मक अध्ययन बहुत ही महत्वपूर्ण है। इससे विश्व में उज्जैन की महत्ता भी सिद्ध होगी। (विस्तृत जानकारी लेखक की पुस्तक 'हिन्दू के केल्टिक स्वजन' से प्राप्त की जा सकती है। सं.) ■

–लेखक अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के विश्व विभाग प्रमुख हैं।

पुण्योदय

■ **जगदीश पुरोहित,** जोधपुर

शुभ घड़ी आई है! अब मंगल घड़ी आई है।
रामलला के बिराजने की शुभ घड़ी आई है।
अब मंगल घड़ी आई है।

संघर्षों में जीते हारे, थक कर कभी न बैठे।
अवरोधों से घबराकर पैर कभी न पीछे हटे
स्वप्न साकार होने की अब उम्मीद जगी है।
अब मंगल घड़ी आई है।

संतों-वीरों ने, नर-नाहर ने बलिदान दिए
सरयू की पावन धारा में, घुलमिलकर गुमनाम हुए
उन हुतात्माओं की स्मृति आज उभर आई हैं।
अब मंगल घड़ी आई है।

पुलकित है धरा आज, पुलकित है जन मन
हैं प्रसन्न आबाल वृद्ध, तरुणों में छाई उमंग
अक्षय पुण्य कमाने की लालसा सबमें आई है।
अब मंगल घड़ी आई है।

ताम्र, रजत और स्वर्ण का अब कहाँ मोल है?
बढ़ चढ़कर देने के सुनते हम बोल हैं।
युवकों में समय दान की, होड़ देखो छाई है।
अब मंगल घड़ी आई है।

बन रहा मंदिर भव्य,रचा जा रहा इतिहास नव्य
हैं अनूठा ये दृश्य कि छा रहा है हिन्दुत्व
रामायण के रामत्व की घड़ी सन्निकट आई है।
अब मंगल घड़ी आई है।

अफगान शरणार्थियों को बाहर का रास्ता दिखा रहा है पाक

दुनिया को दिखाने के लिए एकजुटता का पाखंड करते हैं इस्लामिक देश

▪ हेमलता चतुर्वेदी

वह दौर लगभग समाप्त होता दिखाई दे रहा है,जब विश्व में इस्लामिक देश एकजुटता का पाखंड कर गैर इस्लामिक देशों में आतंक को बढ़ावा देते थे। आज स्थिति यह है कि पाकिस्तान, अफगानिस्तान, तालिबान, सऊदी अरब, बांग्लादेश किसी मोर्चे पर एक साथ खड़े दिखाई नहीं देते। पाकिस्तान की स्थिति सर्वाधिक हास्यास्पद है। यहां न सरकार है,न प्रशासन, न देश को चलाने के लिए संसाधन। ऐसे में,चीन का कर्जदार पाकिस्तान अब पैसे कमाने के लिए अपने देश में अपने 'मुसलमान भाई' शरणार्थियों तक को नहीं छोड़ रहा।

अफगान शरणार्थियों से दो लाख एक्जिट फीस वसूल रहा पाक

खबर है कि पाकिस्तान एक तो अफगाानी शरणार्थियों को देश छोड़ने के लिए मजबूर कर रहा है,दूसरा उनसे इसके लिए एग्जिट फीस भी वसूल रहा है। ये वे शरणार्थी हैं, जो तालिबान द्वारा अफगानिस्तान के अधिग्रहण के बाद वहां से भाग कर पाकिस्तान आ गए थे।

अब पाकिस्तान में ऐसे अफगानी शरणार्थियों की संख्या बहुत बड़ी है जो बिना पूरे कागजी प्रमाणों या वीजा समाप्त होने के बाद भी वहीं रह रहे हैं। पाकिस्तान इन अफगान शरणार्थियों को जबरन देश से बाहर खदेड़ रहा है। और तो और, पाक सरकार पाक छोड़ने वाले इन शरणार्थियों से एग्जिट फीस (पाकिस्तान से बाहर जाने का शुल्क) भी वसूल रही है। फीस के रूप में 830 डॉलर यानी 2,36,965 पाकिस्तानी रूपए वसूले जा रहे हैं।

दोहरा रवैया

जब भारत अपने देश में रह रहे रोहिंग्या मुसलमानों व बांग्लादेशी शरणार्थियों को राष्ट्र के लिए खतरा बताता है तो पाकिस्तान भारत की आलोचना कर उसे मुस्लिम विरोधी कहने लगता है। जबकि ऐसी रिपोर्ट हैं कि एक रोहिंग्या आतंकवादी समूह, जिसे अकामुल मुजाहिदीन के नाम से जाना जाता है, पाक आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मुहम्मद से जुड़ा हुआ है। इस रोहिंग्या आतंकवादी गुट को पाकिस्तान में ही प्रशिक्षित किया गया है।

इसी प्रकार भारत जब नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) लागू करने की बात करता है तो ये विदेशी ताकतें देश के मुसलमानों को बरगलाने तक से बाज नहीं आती।

पश्चिमी देशों के राजनयिकों और संयुक्त राष्ट्र ने की आलोचना

संयुक्त राष्ट्र और पश्चिमी राजनयिकों ने पाक के इस कदम की आलोचना की है।

पाकिस्तान में वरिष्ठ पश्चिमी राजनयिकों ने कहा कि शरणार्थियों से पैसे कमाने की यह कोशिश उनके लिए जले पर नमक छिड़कने जैसा कदम है।

डरा–धमका कर निकाला

इतना ही नहीं, पाकिस्तान ने अफगाान शरणार्थियों को देश से खदेड़ने के लिए क्रूरता की सारी हदें पार कर दीं। उनके घर तोड़ने लगे,उनके पैसे छीने।

इस्लामिक देश बने मूक दर्शक

शरणार्थियों का कहना है कि पाकिस्तान की इस हरकत पर बाकी इस्लामिक देश चुप हैं। दूसरी ओर,पाकिस्तान भारत से रोहिंग्या घुसपैठियों के निष्कासन पर आपत्ति जताता रहा है। उसने इस मुद्दे को इस्लाम से भी जोड़ दिया था और अब स्वयं अपने देश से

अपने 'मुसलमान भाइयों' को खदेड़ रहा है।

तालिबान भी नहीं दे रहा इन 'भाइयों' को शरण

संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्च आयोग के अनुसार, अफगानिस्तान पर तालिबान के कब्जे के बाद करीब 20 लाख अफगानी भागकर पाकिस्तान आ गए थे। इसलिए तालिबान इन्हें अपना दुश्मन मानता है और उसका तर्क है कि इन्हें जबरन लौटने के लिए मजबूर न किया जाए।

एक–दूसरे के शत्रु हैं ये दोनों मुस्लिम देश

अमेरिका स्थित थिंक टैंक विल्सन सेंटर की एक रिपोर्ट के अनुसार, पाकिस्तान ने तालिबान और आतंक को खत्म करने के नाम पर पहले तो अमरीका से पैसा ले लिया, यह रकम थी–3,200 करोड़ डॉलर और जब पैसा मिल गया तो उसने बजाय अमरीका से किया अपना वादा पूरा करने के, तालिबान की मदद करना शुरू कर दिया।

स्पष्ट है इस्लामिक देश केवल गैर इस्लामिक देशों के साथ भू–राजनीति के चलते इस्लामिक एकजुटता की बात करते हैं, अन्यथा सबके अपने–अपने राष्ट्रहित पहले आते हैं। इन सबमें भी स्वयं को इस्लामिक देशों का हिमायती बताने वाले पाकिस्तान की सच्चाई आज दुनिया के सामने है। समय आ गया है कि विश्व शक्तियां इस्लामिक देशों की 'एकजुटता के ढकोसले' को पहचाने और विश्व को बांटने वाली इनकी झूठी बातों से सतर्क रहे। ■

अत्याचार पर साहस व सत्य की विजय का त्योहार

लोहड़ी पर्व

लोहड़ी वैसे तो पंजाब, हरियाणा और दिल्ली जैसे अनेक राज्यों के बड़े त्योहारों में से एक है लेकिन पिछले अनेक वर्षों से अब इसे उत्तर भारत के अन्य क्षेत्रों में भी धूमधाम से मनाया जाने लगा है। इस पर्व को सुख–समृद्धि व खुशियों का प्रतीक माना जाता है। लोहड़ी पर्व प्रत्येक वर्ष मकर संक्रांति से एक दिन पूर्व 13 जनवरी की संध्या को मनाया जाता है । इस पर्व के लिए पंजाबी परिवारों में विशेष उत्साह होता है। यह उत्साह तब और बढ़ जाता है यदि घर में नव विवाहित बहू या फिर बच्चे का जन्म होता है। लोहड़ी के त्यौहार का मौसम व फसल से भी जुड़ाव है। इस मौसम में पंजाब में किसानों के खेत लहलहाने लगते हैं। रबी की फसल कटकर आ जाती है। ऐसे में नई फसल की खुशी और अगली बुवाई की तैयारी से पहले इस त्यौहार को धूमधाम से मनाया जाता है।

लोहड़ी शब्द का अर्थ

लोहड़ी शब्द में 'ल' का मतलब लकड़ी, 'ओह' से गोहा यानी जलते हुए सूखे उपले और 'ड़ी' का मतलब रेवड़ी से होता है । समयानुसार इन तीनों शब्दों को मिलाकर ''लोहड़ी'' शब्द इस त्योहार को परिभाषित करने लगा। ठंड की इस रात को परिवार के साथ उल्लास पूर्वक मनाने के लिये लकड़ी और उपलों की मदद से आग जलाई जाती है। उसके बाद अग्नि में तिल की रेवड़ी, चिवड़ा, मूंगफली व मक्का आदि से बनी चीजों को अर्पित किया जाता है । परिवार के सदस्य, मित्र व करीबी मिलजुल कर अग्नि की परिक्रमा करते हैं व नाच–गाना भी करते हैं। कई जगह ढोल–नगाड़े बजाए जाते हैं व पुरुष तथा महिलाएं भांगड़ा और गिद्दा करते हैं। इन लोक नृत्यों में पंजाब की परम्परा व शैली स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। जलती अग्नि के सामने नव विवाहित जोड़े अपने वैवाहिक जीवन को सुखमय बनने की कामना करते हैं । पवित्र अग्नि में तिल डालने के बाद बड़े–बुजुर्गो से आशीर्वाद लिया जाता है।

लोहड़ी से जुड़ी कथा

इस पर्व का संबंध अनेक ऐतिहासिक कथाओं से जोड़ा जाता है, पर सबसे प्रमुख लोक कथा दुल्ला भट्टी की है। वह मुगलों के समय का बहादुर यौद्धा था, जिसने मुगलों के बढ़ते अत्याचार के विरुद्ध कदम उठाया।

कहा जाता है कि पंजाब में संदलबार नाम की जगह पर एक ब्राहमण की दो लड़कियों सुंदरी व मुंदरी के साथ इलाके का स्थानीय मुगल शासक जबरन शादी करना चाहता था पर उनकी सगाई पहले से कहीं और हुई थी। मुगल शासक के डर से इन लड़कियों के ससुराल वाले शादी के लिए तैयार नहीं हो रहे थे। मुसीबत की घड़ी में दुल्ला भट्टी ने ब्राह्मण की मदद की तथा लड़के वालों को मनाकर एक जंगल में आग जलाकर सुंदरी और मुंदरी का विवाह करवा कर स्वयं दोनों कन्याओं का कन्यादान किया। कहा जाता है कि दुल्ले ने शगुन के रूप मे उन दोनों को शक्कर दी। दुल्ला भट्टी जिसे पंजाब का नायक कहा जाता था, द्वारा की गई मानवता की सेवा को,

आज भी लोग याद करते हैं तथा इस कथानुसार लोहड़ी का पर्व अत्याचार पर साहस व सत्य की विजय के पर्व के रूप में मनाते हैं। इसी कथा की हिमायत करता लोहड़ी का निम्न गीत भी इस अवसर पर अवश्य गाया जाता है:

सुंदर मुंदरिये हो, तेरा कौन बेचारा हो ।
दुल्ला भट्टी वाला हो, दूल्ले ने धी ब्याही हो, सेर शक्कर पाई हो ...
दे माई लोहड़ी, जीवे तेरी जोड़ी

(अर्थात्-सुंदरी और मुंदरी,तुम्हारी परवाह कौन करेगा। दुल्ला भट्टी वाला करेगा। दुल्ला भट्टी अपनी बेटी बनाकर शादी करेगा। उसने शगुन में एक किलो शक्कर दी... हमें लोहड़ी दो, तुम्हारी जोड़ी दीर्घायु हो।)

अब कन्या लोहड़ी भी

स्त्री-पुरूष समानता को स्वीकार करते हुए आजकल अनेक संस्थाएं व परिवार ''कन्या-लोहड़ी'' भी मनाने लग गए हैं जहाँ कन्याओं को जन्म देने वाली माताओं को सम्मानित किया जाता है।

कई स्थानों पर लोहड़ी की रात को गन्ने के रस की खीर बनाई जाती है और अगले दिन (माघी के दिन) खाई जाती है जिसके लिए 'पौह रिद्धि माघ खाधी'' अर्थात् पौष माह में बनाया व माघ माह में खाया कहा जाता है।

लोहड़ी से जुड़ी 'सूर्य देव' की भी एक कथा है। चूंकि लोहड़ी सर्दियों के अंत को चिन्हित करने के लिए पौष महीने के अन्तिम दिन मनाई जाती है। ऐसा कहा जाता है कि पूर्वजों ने एक पवित्र मंत्र तैयार किया था जो उन्हें ठंड से बचाएगा। यह मंत्र सूर्य देव का आह्वान करने के लिए बनाया गया था ताकि वे उन्हें इतनी गर्मी भेजें कि सर्दियों की ठंड का उन पर कोई प्रभाव न पड़े। सूर्य देव को इस हेतु धन्यवाद देने के लिये हमारे पूर्वजों ने पौष के आखिरी दिन अग्नि के चारों ओर इस मंत्र का जाप किया । लोहड़ी की आग सूर्य के प्रति श्रद्धा का प्रतीक है। लोहड़ी के बाद की सुबह जो नए माह माघ का पहला दिन होता है, सूर्य की किरणें अचानक गर्म हो जाती हैं।

मार्क ट्वेन ने कहा था

अमेरिका के प्रसिद्ध लेखक मार्क ट्वेन ने भारत यात्रा से लौटने के बाद अपने संस्मरणों में भारत के बारे में लिखा था ''यह भारत है सपनों और रोमांच की भूमि... मानव जाति की पालनहार, मानव बोली की जन्मभूमि, इतिहास की जननी, अविस्मरणीय कथाओं की दादी, परम्पराओं की परदादी जिसके बीते कल की छाप बाकी देशों के विकास पर साफ दिखाई देती है । एक ऐसी धरती जिसे सब देखना चाहते हैं, चाहे एक ही झलक दिखाई दे । एक बार देखने के बाद उसे भारत जैसी झलक कहीं दिखाई नहीं देगी फिर चाहे वह पूरा विश्व घूम आये।''

कुल मिलाकर हम यह कह सकते हैं कि लोहड़ी इस देश का एक प्रमुख त्यौहार है जिसके साथ हमारी मान्यताएं, परम्पराएं और लोक कथाएं जुड़ी हैं तथा स्वाभिमानी देश के नागरिक होने के नाते हमें अपने इन त्यौहारों पर गर्व करना चाहिए ।

(श्री जसबीर सिंह, अध्यक्ष सलाहकार समिति, गुरु गोबिंद सिंह अध्ययनपीठ राजस्थान विश्वविद्यालय तथा श्री गुरुचरण सिंह गिल, पूर्व अति.महाधिवक्ता राजस्थान से हुई वार्ता के आधार पर)

मकर संक्रांति

मकर संक्रांति त्योहार समयानुकूल तो है ही, साथ ही इसको मनाने के पीछे वैज्ञानिक कारण भी हैं। सूर्य के मकर राशि में प्रवेश को 'मकर संक्रांति' कहा जाता है। सूर्य एक वर्ष में 12 राशियों में भ्रमण करता है। सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश को संक्रमण या संक्रांति कहा जाता है। इस प्रकार एक वर्ष में 12 संक्रांतियां होती हैं, किंतु मकर संक्रांति का विशेष महत्व है।

दक्षिण भारत में इसे 'पोंगल' कहा जाता है वहीं पंजाब व जम्मू-कश्मीर में इसकी पूर्व संध्या 'लोहड़ी' के रूप में मनाई जाती है। आंध्र प्रदेश व कर्नाटक में इसे 'भोगी' व असम में 'बिहू' के रूप में यह पर्व मनाया जाता है।

मकर संक्रांति से सूर्य का उत्तर की ओर क्रमशः बढ़ना आरंभ हो जाता है, जिसे सूर्य का उत्तरायण कहा जाता है। सूर्य का उत्तरायण 6 माह तक अर्थात् कर्क संक्रांति तक रहता है। उत्तरायण प्रारम्भ होने पर रातें छोटी और दिन बड़े होने लगते हैं।

इस दिन लोग विशेष रूप से पवित्र नदियों, तालाबों तथा जलाशयों आदि में स्नान कर दान-पुण्य से दिन की शुरुआत करते हैं। घर-घर में इस दिन तिल व गुड़ के व्यंजन बनाकर खाए-खिलाए जाते हैं। इस दिन कई स्थानों पर पतंग उड़ाने का भी चलन है। दान-पुण्य से जहां मानसिक शांति मिलती है वहीं तिल-गुड़ के एकमय होने का भाव समाज में स्नेह और मधुरता का संदेश देता है। इस तरह से इस पर्व का आयोजन समाज में समरसता की प्रगाढ़ता को बढ़ाता है।

मकर संक्रांति पर्व को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने 6 उत्सवों में से एक उत्सव माना है। इस दिन संघ की सभी शाखाओं पर तिल-गुड़ से बने व्यंजन मिल बांट कर खाए-खिलाए जाते हैं।

ऐतिहासिक संदर्भ में यदि हम देखते हैं तो यह वह दिन है जब गुरु गोविन्द सिंह के 40 शिष्यों ने युद्ध भूमि में वीरगति प्राप्त की थी। ये शिष्य गुरु गोविंद सिंह का साथ छोड़ आए थे। बाद में इन्हें पश्चाताप हुआ तो मुगल हमलावरों के विरुद्ध अद्भुत वीरता दिखा कर इन शिष्यों ने अपना बलिदान दिया। मकर संक्रांति के दिन मुक्तसर (पंजाब) में हर साल इन वीरों की स्मृति में मेला भी भरता है। यह मेला 'माघी मेला' के नाम से विख्यात है।

-मनोज गर्ग

गरीब परिवार की बेटियों का मायरा भरती है किन्नर सिमरन

विवाह-पुत्र जन्मोत्सव (अब तो बेटी के जन्म पर भी) पर बधाई देने के बदले रुपये-पैसे प्राप्त करने वाले किन्नर अब समाज के गरीब-वंचित लोगों की सहायता कर सामजिक समरसता के लिए प्रयासरत हैं।

ताजा उदाहरण कूकस (जयपुर) की मीरा देवी का है जो सब्जी का ठेला लगा कर अपनी 6 बेटियों का पालन-पोषण कर रही है। मीरा के पति और 3 भाइयों की मृत्यु हो चुकी है। परिवार में केवल एक भाई है जिसकी आर्थिक हालत बहुत अच्छी नहीं है। ऐसे में बेटी मोनिका की शादी की बात जब किन्नर सिमरन को पता चली तो वह अपने साथियों को लेकर गाने-बाजे के साथ मीरा के यहां पहुंची और पीहर पक्ष की भूमिका अदा करते हुए मायरा भरा। उन्होंने भात में 21 हजार रुपए नकद, सोने-चांदी के आभूषण, नव गृहस्थी का सामान तथा 51 जोड़े कपड़े आदि दिए। किन्नर सिमरन मनोहरपुर क्षेत्र की गद्दीपति हैं। सामाजिक कार्यों में सदैव अग्रणी रहने वाली सिमरन पिछले 10 वर्षों में 21 गरीब कन्याओं का मायरा भर चुकी है। इससे पूर्व इनके द्वारा लॉकडाउन में किए गए सेवा कार्यों की समाज द्वारा भूरि-भूरि प्रशंसा की जा चुकी है।

जयपुर

स्वयं के विवाह में किया वाल्मीकि समाज बंधुओं का सम्मान

भरतपुर

जाति-पांति, भाषा-क्षेत्र, मत-संप्रदाय आदि के नाम पर बिखरे समाज को एकजुट करने का कार्य संघ के कार्यकताओं द्वारा निरंतर किया जा रहा है। ऐसा ही एक उदाहरण पिछले दिनों भरतपुर के स्वयंसेवक संजय डांगी के विवाह अवसर पर देखने को मिला।

बीती 2 दिसम्बर को शादी के शुभ अवसर पर संजय जी के परिवारजनों ने सेवर क्षेत्र में रहने वाले वाल्मीकि समाज बंधुओं को समारोह में बुलाकर उन्हें मिठाई, श्रीराम पट्का तथा 51-51 रुपए भेंट में देकर समाज में समरसता का संदेश दिया। इसके पश्चात उपस्थितजन सहभोज में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर उपस्थित वाल्मीकि समाज के प्रमुख श्री रमेश ने बताया कि वाल्मीकि रचित रामायण संपूर्ण हिंदू समाज को त्याग, समर्पण और सेवा भाव की प्रेरणा देती है। महर्षि वाल्मीकि ने जो हमें दिया वह संपूर्ण हिंदू समाज के लिए है। महापुरुषों को जाति-पांति में नहीं बांटा जा सकता।

संजय जी भीलवाड़ा जिला महाविद्यालय विद्यार्थी कार्य प्रमुख के रूप में संघ का कार्य देखते हैं।

गाड़िया लोहार परिवार की बेटी का भात भरा सेवा भारती के कार्यकर्ताओं ने

बीकानेर

बीकानेर शहर की सेवा भारती इकाई ने गाड़िया लोहार परिवार की बेटी ज्योति का मायरा (भात) भरा। प्रताप बस्ती स्थिति ज्योति के पिता जेठमल गाड़िया लोहार का कुछ समय पूर्व निधन हो गया था। ऐसे में सेवा भारती के कार्यकर्ताओं ने ज्योति के परिवार की कमजोर आर्थिक स्थिति को देखकर मायरा भरने का निर्णय किया। ज्योति की मां को बहन मानकर समाज सहयोग से भात भरा। भात के दौरान बिटिया को 31 हजार रुपए नकद तथा नव गृहस्थी चलाने हेतु आवश्यक सामान भी भेंट किया।

कार्यक्रम के दौरान सेवा भारती के भंवरलाल शर्मा, सांवरमल मोदी, सत्यप्रकाश खत्री व अजीत सहित अन्य स्वयंसेवक एवं समाजसेवी उपस्थित थे।

उत्तर : जांचें आप कितने ज्ञानवान हैं? 1.पीटी ऊषा 2. चन्द्रगुप्त मौर्य 3. त्रिपुरा 4. पारा 5. हीरालाल सामरिया 6. विदुर 7.मथुरा 8. कठोपनिषद् 9.आगरा 10.जयमल राठौड़

उत्तर बाल प्रश्नोत्तरी-45 : 1.(ख) 2.(ग) 3.(क) 4.(ख) 5.(क) 6.(ख) 7.(क) 8.(क) 9.(क) 10.(घ)

जयंती (12 जनवरी) पर विशेष

राष्ट्रीय जीवन का प्रवाह

"तुम जो युगों तक धक्के सहकर भी अक्षय हो, इसका कारण केवल यही है कि धर्म के लिए तुमने बहुत कुछ प्रयत्न किया था, उसके लिए अन्य सब कुछ साहसपूर्वक सहन किया था, यहाँ तक कि मृत्यु को भी गले लगाया था। मन्दिर के बाद मन्दिर तोड़े गए, किन्तु जैसे ही वह आँधी गुजरी, मन्दिर का शिखर पुन: खड़ा हो गया। दक्षिण भारत के ऐसे कुछ प्राचीन मन्दिर विशेषकर गुजरात का सोमनाथ मन्दिर तुम्हें अक्षय ज्ञान प्रदान करेगा। इतिहास के प्रति जो गहरी दृष्टि इन मंदिरों से मिलती है, वह ढेरों पुस्तकों से नहीं मिल सकती। ध्यान से देखो, इन मन्दिरों पर सैकड़ों आक्रमणों एवं सैकड़ों पुनरुत्थानों के चिह्न किस तरह अंकित हैं? वे बार-बार नष्ट हुए और खण्डहरों में से पुन: उठ खड़े हुए पहले की ही भाँति सशक्त एवं नवजीवनयुक्त। यही है हमारा राष्ट्रीय मानस, यही है हमारा राष्ट्रीय जीवन-प्रवाह।"

■ **स्वामी विवेकानन्द**
(साभार-विवेकवाणी)

पुण्यतिथि (11 जनवरी) पर विशेष

जब सरकारी कार का किराया अपनी जेब से दिया

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अहम भूमिका निभाने वाले लाल बहादुर शास्त्री 9 जून, 1964 से 11 जनवरी, 1966 तक देश के दूसरे प्रधानमंत्री रहे। उन्होंने अपने विनम्र स्वभाव, मृदुभाषी व्यवहार और आमजन से जुड़ने की क्षमता से भारतीय राजनीति पर अमिट छाप छोड़ी। उनकी पुण्यतिथि पर एक प्रेरणादायी संस्मरण पाठकों के लिए यहाँ दिया जा रहा है जो आज के संदर्भ में बड़ा ही अनुकरणीय है।

लाल बहादुर शास्त्री

जब शास्त्री जी प्रधानमंत्री बने तो उन्हें काम-काज के लिए एक सरकारी कार दी गई। एक बार उनके पुत्र सुनील शास्त्री ने शास्त्री जी के निजी सचिव से कहा कि ड्राइवर को सरकारी इंपाला कार के साथ घर भेज दें। जब कार घर पर आ गई तो शास्त्री जी के पुत्र और उनके कुछ दोस्त कार से घूमने निकल गए।

देर रात घर लौटे तो कार को चुपचाप बाहर खड़ा कर रसोईघर के रास्ते से घर में घुसे और बिना आवाज किए अपने कमरे में जाकर सो गए। 6:30 बजे कमरे के दरवाजे पर किसी की दस्तक थी। नौकर समझकर सुनील ने चिल्लाकर कहा, "अभी मुझे तंग ना करो, मैं देर रात को सोया हूँ।"

दरवाजे पर फिर से दस्तक हुई। दरवाजा खोला तो सामने शास्त्री जी खड़े थे। उन्होंने अपने पुत्र को नीचे आने के लिए कहा, जहाँ सभी लोग सुबह की चाय पी रहे थे। नीचे पहुँचते ही माता जी ने पूछा- "कल रात तुम कहाँ गए थे और इतनी देर से क्यों लौटे?" वे जवाब दे पाते इससे पहले ही शास्त्री जी ने पूछा, "तुम गए कैसे थे? मैं जब कार्यालय से लौटा तो हमारी फिएट कार तो पेड़ के नीचे खड़ी थी"। पुत्र ने कहा, "मैं दोस्तों के साथ आपकी सरकारी कार से घूमने गया था।" चाय पीने के बाद शास्त्री जी ने कार के ड्राइवर को बुलाने के लिए कहा। उन्होंने ड्राइवर से पूछा-

"क्या आप अपनी कार में कोई लॉग बुक रखते हैं?"

ड्राइवर ने कहा- "जी हाँ साहब"। उन्होंने फिर पूछा- "कल सरकारी कार कुल कितने किलोमीटर चली थी?" ड्राइवर ने कहा -"14 किलोमीटर'

जवाब सुनकर शास्त्री जी ने ड्राइवर से कहा, "इसे निजी काम के लिए जाने के मद (खर्चे) में लिखा जाए।" और अपनी पत्नी को निर्देश दिया कि प्रति किलोमीटर के हिसाब से 14 किलोमीटर का जितना पैसा बनता है, उनके निजी सचिव को दें ताकि उसे सरकारी खजाने में यथाशीघ्र जमा कराया जा सके।

इस प्रसंग के बाद उनके परिवार के किसी भी सदस्य ने सरकारी कार को निजी काम के लिए प्रयोग में नहीं लिया। ■

अब छुट्टियों के नाम पर छात्रों से छल

बिहारः शिक्षण संस्थान बने तुष्टिकरण का नया हथियार

बिहार की नीतीश सरकार ने लगता है तुष्टिकरण का नया हथियार ढूंढ़ लिया है– स्कूली शिक्षा। हाल ही नौवीं–दसवीं कक्षा में संस्कृत के पाठ्यक्रम में मुस्लिम पर्वों के बारे में पढ़ाई करवाने का मामला सामने आया था और अब शिक्षा संस्थानों में छुट्टियों के दो कलैंडर जारी कर विभाग ने तुष्टिकरण का नया दांव खेल दिया है। एक कलैंडर अल्पसंख्यक मुस्लिम वर्ग के शिक्षण संस्थानों के लिए जारी किया गया है, जिसमें ईद, बकरीद व मोहर्रम पर छुट्टी बढ़ा कर तीन–तीन दिन की कर दी गई है। साथ ही साप्ताहिक अवकाश भी बदल कर रविवार की जगह शुक्रवार के दिन का कर दिया गया है।

शिक्षा विभाग द्वारा उठाया गया यह अनावश्यक कदम विवाद में आना तय माना जाना चाहिए था लेकिन तुष्टिकरण की नीति के वशीभूत सरकार यह कहकर अपने इरादे छिपाने का प्रयास कर रही है कि विभाग ने दो कलैंडर जारी किए हैं। गैर इस्लामिक

स्कूलों के लिए जारी किए गए कलैंडर में जन्माष्टमी, शिवरात्रि, वसंत पंचमी, रामनवमी, तीज, जिउतिया, अनंत चतुर्दशी, भैया दूज, गोवर्धन पूजा, गुरुनानक जयंती व कार्तिक पूर्णिमा की छुट्टियां खत्म कर दी गई हैं। साथ ही 2 अक्टूबर को होने वाली गांधी जयंती की छुट्टी भी खत्म कर दी है। और तो और, दीपावली पर मात्र एक दिन का अवकाश दिया जाएगा।

दूसरी ओर, सामान्य स्कूलों में मुस्लिम मजहब से जुड़े अवकाशों को खत्म नहीं किया गया है। ऐसा पहली बार हुआ है कि राज्य सरकार ने शिक्षण संस्थानों के लिए दो कलैंडर जारी किए हैं।

उर्दू स्कूलों के लिए रविवार की जगह शुक्रवार को साप्ताहिक छुट्टी का दिन तय करना घोर साम्प्रदायिकता और अलगाव की भावना पैदा करने वाला निर्णय है। ये उर्दू स्कूल या तो सरकारी हैं या सरकार से मान्यता प्राप्त हैं। क्या इस तरह के निर्णयों से मुसलमानों में यह भाव नहीं भरा जा रहा है कि वे शेष समाज से अलग हैं, वे भारत–राष्ट्र या भारत–देश का हिस्सा नहीं हैं, उनका अलग से वजूद है। ऐसा निर्णय कालान्तर में देश की एकता के लिए घातक होगा। तुष्टिकरण के फेर में पड़ी राज्य सरकार यह क्यों भूल रही है कि शिक्षण संस्थान भारत देश के नागरिक तैयार करने वाले स्थल हैं,यहां तो कम से कम भेदभाव का पाठ न पढ़ाएं। यह देश को बांटने वाला कृत्य है।

ग्लोबल हुआ गरबा

यूनेस्को की सांस्कृतिक धरोहर सूची में 'गरबा' शामिल

संयुक्त राष्ट्र की संस्था 'यूनेस्को' ने गुजरात के पारंपरिक गरबा लोकनृत्य को अपनी सांस्कृतिक–विरासत (आईसीएच) सूची में शामिल किया है। यह दर्जा प्राप्त करने वाला 'गरबा नृत्य' भारत की 15वीं धरोहर है जिसकी घोषणा यूनेस्को द्वारा बीती 6 दिसम्बर को बोत्सवाना में की गई। जानकारी हो कि गरबा भक्ति व शक्ति की

प्रतीक मां दुर्गा की आराधना के पर्व नवरात्र के दौरान पूरी 9 रातों तक गुजरात में बड़े धूम धाम से खेला जाता है। ऐसे आयोजन अब अन्य स्थानों पर भी होने लगे हैं। यह देवी दुर्गा और राक्षस महिषासुर के बीच हुए युद्ध में माता रानी के विजय का प्रतीक माना जाता है।

आपको बता दें कि इससे पूर्व बंगाल की दुर्गा पूजा, भारत का योग, वैदिक मंत्रोच्चार, लद्दाख का बौद्ध मंत्रोच्चार, छऊ नृत्य, रामलीला, नवरोज, कुंभ मेला भी इस सूची में शामिल हो चुके हैं।

चुनावी हार पर कांग्रेस के आचार्य ने कहा

सनातन का विरोध हमें ले डूबा

कांग्रेस नेता आचार्य प्रमोद कृष्णन ने कहा कि सनातन का विरोध हमें ले डूबा। कश्मीर से कन्याकुमारी तक, भारत एक है और देश को विभाजित करने की बात करना दुर्भाग्यपूर्ण है। धर्म, जाति, भाषा या क्षेत्र पर आधारित कोई भी विभाजन देश के लिए खतरनाक है। देश को पूर्व, पश्चिम, उत्तर या दक्षिण में बांटना हानिकारक है। मैं ऐसे किसी भी बयान का समर्थन नहीं करता। पूरा देश एक है। हमारी भाषाएं अलग हो सकती हैं, लेकिन भावना एक ही है,'वंदेमातरम्'।

वहीं इससे पहले भी कांग्रेस नेता आचार्य प्रमोद कृष्णन ने कांग्रेस पर निशाना साधा था। उन्होंने दोहराया कि कांग्रेस पार्टी को सनातन का श्राप ले डूबा है। उन्होंने कहा भारत भावनाओं का देश है। इस देश ने जाति–आधारित राजनीति को कभी भी स्वीकार नहीं किया है।

राज्य स्तरीय सिन्धी शिक्षण सेमिनार सम्पन्न

जयपुर

भारतीय सिन्धु सभा सिन्धी भाषा के प्रचार-प्रसार और विकास के लिए इस वर्ष कई प्रकार से प्रयत्न कर रही है। गत 28 नवम्बर को सिन्धी शिक्षण सेमिनार में भारतीय सिन्धु सभा के भाषा मंत्री नवल किशोर गुरनाणी ने बताया कि प्रदेश के 21 जिलों में भाषा के विकास का कार्य हुआ है। नवगठित जिलों में सिन्धी भाषा के विकास कार्यों को विस्तार देने का लक्ष्य रखा गया है।

सेमिनार में बाल संस्कार शिविर, सरकारी योजनाओं की जानकारी, स्वयं सहायता समूह बनाने व मातृ शक्ति के सशक्त गठन की आवश्यकता पर भी बल दिया गया।

प्रदेशाध्यक्ष श्री मोहन वाधवानी ने सिन्धी भाषा संस्कृति व इतिहास की जानकारी का महत्व बताते हुए आगामी वर्षों में एक हजार सिन्धी कक्षाएं लगाने का आह्वान किया। इस अवसर पर सिन्धी विषय में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वालों का भी सम्मान किया।

सिंधी शिक्षक-प्रशिक्षण सेमिनार का आयोजन जयपुर में भारतीय सिन्धु सभा, राजस्थान व राष्ट्रीय सिन्धी भाषा परिषद, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में किया गया था।

कक्षा दो की छात्रा को कंठस्थ हैं संस्कृत के आदित्य, हरि एवं महिषासुर स्त्रोत

भीलवाड़ा

बच्चों को अगर शिक्षा व संस्कार के साथ-साथ सही दिशा दी जाए तो महज छोटी सी उम्र में ऐसा कुछ कर जाते हैं जो हैरान ही नहीं करता वरन् प्रेरणा का सबब ही बनता है।

ताजा उदाहरण है भीलवाड़ा की 7 साल की कृषा वैष्णव का जिसने खेलने-कूदने की उम्र में संस्कृत रचित 'आदित्य हृदय स्त्रोत' के 31 श्लोकों को कंठस्थ व सस्वर पाठ कर 'इण्डिया बुक ऑफ रिकॉर्ड' में नाम दर्ज किया है। मात्र 2 मिनट 18 सैकण्ड में यह रिकॉर्ड बनाने वाली वह राजस्थान की पहली लड़की है। कृषा अभी कक्षा 2 में पढ़ाई कर रही है।

इससे पूर्व 5 वर्ष की उम्र में कृषा शिव तांडव स्त्रोत तथा साढ़े पांच वर्ष की उम्र में महिषासुरमर्दिनी स्त्रोत, हरि स्त्रोत् और रामकथा के म्यूजिकल एलबम भी बना चुकी हैं। इतनी कम उम्र में रिकॉर्ड बनाकर कृषा ने उन सभी बच्चों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत किया है जो सोशल मीडिया प्लेटफार्म, मोबाइल व अन्य गैजेट्स की दुनिया में खोए हुए हैं।

भीलवाड़ा में संगीत की शिक्षा ले रही कृषा अध्ययन के साथ-साथ वाद्य यंत्रों में भी अच्छी खासी रूचि रखती है। कृषा की माता गृहणी है और पिता डॉ. जयराज वैष्णव भीलवाड़ा के महात्मा गांधी अस्पताल में ईएनटी के विभागाध्यक्ष हैं।

श्रद्धांजलि

नहीं रहे पंजाब के पहले सिख प्रचारक चिरंजीव सिंह जी

जीवनपर्यन्त संघ कार्य के लिए समर्पित रहे श्री चिरंजीव सिंह का बीती 20 नवम्बर को निधन हो गया। वे 93 वर्ष के थे। पटियाला (पंजाब) के एक साधारण किसान परिवार में जन्मे (1 अक्टूबर,1930) चिरंजीव जी संघ के प्रचारक बनने वाले पहले सिख थे। 1953 में संघ प्रचारक बन मलेरकोटला, संगरूर, पटियाला, रोपड़, लुधियाना में तहसील, जिला, विभाग व सह संभाग प्रचारक रहे। 1975 में वे प्रांत बौद्धिक प्रमुख बने। उसी समय आपातकाल लगा तो आपने भूमिगत रहकर जन-जागरण का काम शुरू किया और जो कार्यकर्ता बंदी बना लिए गए थे, उनके परिवारों की देखभाल करने का जिम्मा भी संभाला।

पंजाब में उग्रवाद के दिनों में जब सामाजिक समरसता की बात कहना दुस्साहस जैसा बन गया था, उस समय संगठन की योजना से गठित 'पंजाब कल्याण फोरम' के संयोजक का महत्वपूर्ण दायित्व भी उन्होंने निभाया। वे जान हथेली पर रखकर सांझीवालता की सोच रखने वाले सिख विद्वानों, सिख संतों और अन्य प्रमुख हस्तियों से निरंतर संवाद करते और उग्रवाद से पीड़ित परिवारों के साथ खड़े रहते। उनकी हर आवश्यकता को उन्होंने पूरा करने का प्रयास किया।

आप 1990 में राष्ट्रीय सिख संगत के अध्यक्ष बने। संगत के काम को विस्तार देने के लिए आपने कई देशों की यात्रा भी की। वृद्धावस्था के कारण 2003 में उन्होंने सिख संगत के अध्यक्ष से त्याग पत्र दे दिया। पंजाब में आपके अथक प्रयासों व परिश्रम से संघ कार्य को विस्तार मिला। आपने उत्कृष्ट संगठनात्मक कौशल के बल पर असंख्य लोगों को राष्ट्र कार्य से जोड़ा।

पाथेय कण परिवार आपको श्रद्धासुमन अर्पित करता है।

भारत के लिए अपना हर नागरिक है मूल्यवान

उत्तराखंड की सिलक्यारा सुरंग निर्माण के दौरान 70 मीटर लंबे मलबे की दीवार के पीछे फंसे 41 श्रमिकों को बाहर निकालने के सारे प्रयास विफल हो रहे थे। विश्व गौर से देख रहा था कि भारत सरकार क्या इनको सुरक्षित बाहर निकाल पाएगी? अमेरिकन एवं जर्मन मशीनें सफल नहीं हो पा रही थीं। परंतु जिस धैर्य और लगन के साथ इस मामले में केन्द्र व राज्य सरकार ने तत्परता दिखाई, उसे भी विश्व देख रहा था। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री धामी, केन्द्रीय मंत्री वीके सिंह व केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी समय-समय पर घटना स्थल का अवलोकन करते रहे। प्रधानमंत्री मोदी ने लगातार मुख्यमंत्री धामी से संपर्क बनाए रखा और हर तरह का सहयोग व सहायता उपलब्ध कराई। सुरंग में फंसे सभी मजदूर जैसे ही सुरक्षित बाहर निकले पूरा इलाका 'भारत माता की जय' के नारों से गुंजायमान होने लगा।

क्या है सिलक्यारा सुरंग

चार धाम यात्रा मार्ग पर बन रही साढ़े चार किलोमीटर लंबी 'सिलक्यारा सुरंग' देश की पहली अत्याधुनिक सुरंग है। वर्ष 2018 में प्रारम्भ हुई यह परियोजना धार्मिक पर्यटन के साथ-साथ सामरिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण परियोजना है। इसके निर्माण से सभी मौसम में केदारनाथ, बद्रीनाथ, यमुनोत्री और गंगोत्री के लिए यात्रा करने वाले श्रद्धालु पर्यटकों को सुगमता होगी। इसके बनने से गंगोत्री और यमुनोत्री के बीच की 31.5 किलोमीटर की दूरी कम हो जायेगी। इसके साथ ही आपात स्थिति में यह हमारी सेना के लिए चीन सीमा तक त्वरित गति से पहुँचने में मददगार सिद्ध होगी। उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले में ब्रह्मखाल-यमुनोत्री राजमार्ग पर निर्माणाधीन सुरंग केन्द्र सरकार की बहुउद्देशीय परियोजनाओं में से एक है।

नई दिल्ली

नई दिल्ली के बुराड़ी में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए गृह मंत्री अमित शाह। देशभर के 10 हजार छात्र प्रतिनिधि ले रहे हैं भाग

सिक्किम

विद्या भारती, सिक्किम द्वारा दीपावली कार्यक्रम में सहभागी बच्चे

जयपुर

अरावली मोंशस सोसायटी व मनसंचार समूह द्वारा विश्व एड्स दिवस (1 दिसम्बर) पर शॉर्ट फिल्म 'जिद्दी' की स्क्रीनिंग की गई जयपुर के मानसरोवर स्थित अनुकम्पा परिसर में

***ब्रिटेन** के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक अपने परिवार के साथ सरकारी आवास में दिवाली मनाते हुए*

क्या आप जानते हैं?

■ **ऑपरेशन कच्छप क्या है?**

– गंगा नदी में पाई जाने वाली कछुओं की 13 दुर्लभ प्रजातियों को बचाने के लिए ऑपरेशन कच्छप अभियान चलाया जा रहा है।

■ **भारत एनसीएक्स क्या है?**

– साइबर खतरों और घटनाओं से निपटने के लिए राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा अभ्यास का दूसरा संस्करण आयोजित किया गया जिसे भारत एनसीएक्स नाम दिया गया।

■ **संध्याक क्या है?**

– संध्याक भारतीय नौसेना को सौंपा गया सर्वेक्षण पोत है जिसे कोलकाता में 80 प्रतिशत से अधिक स्वदेशी सामग्री से निर्मित किया है।

दिवस

प्रवासी भारतीय दिवस : 9 जनवरी

भारत के विकास में प्रवासी भारतीय समुदाय के योगदान को चिह्नित करने के लिए हर साल 9 जनवरी को यह दिवस मनाया जाता है। भारत सरकार द्वारा इस दिवस को मनाने की शुरुआत वर्ष 2003 में दिल्ली से हुई थी।

थल सेना दिवस : 15 जनवरी

15 जनवरी, 1949 को भारतीय सेना ब्रिटिश सेवा से मुक्त हुई थी और इसी दिन फील्ड मार्शल केएम करियप्पा स्वतंत्र भारत के प्रथम सेना प्रमुख बने थे। वीर सपूतों के बलिदान पर गर्व करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि देने के अवसर के रूप में यह दिवस प्रतिवर्ष 15 जनवरी को 'थल सेना दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

गणित पहेली

दी गई आकृति में त्रिभुजों की संख्या ज्ञात कीजिए।

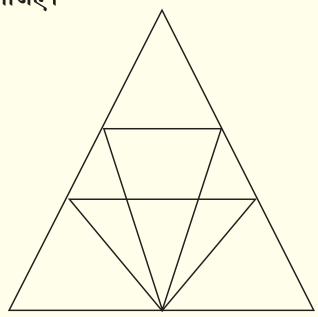

उत्तर: 18 त्रिभुज

मोबाइल के अधिक प्रयोग से युवाओं में घट रही है प्रजनन क्षमता

पुरुषों में इंफर्टिलिटी (प्रजनन क्षमता) का खतरा बढ़ाने के लिए फोन भी जिम्मेदार है। यह दावा 'फर्टिलिटी एंड स्टेरिलिटी जर्नल' लंदन में हुए एक शोध में किया गया है। शोधकर्ताओं ने कहा है कि 18 से 22 साल के जो युवा दिनभर फोन का उपयोग करते हैं, उनके स्पर्म काउंट 21 प्रतिशत तक और ज्यादा उम्र के लोगों में 30 प्रतिशत तक कम पाया गया।

कुकिंग टिप्स

आलू को छीलने में काफी समय लगता है तो आलू उबालते समय पानी में एक चुटकी सादा नमक डाल दें। ऐसा करने से आलू आसानी से छिल जाएंगे।

घरेलू नुस्खा

बंद नाक खोलने के लिए : एक चम्मच अजवाइन लेकर एक गिलास पानी में मिला लीजिए। अब इस पानी को उबालने के लिए रख दें। जब पानी से भाप उठने लगे तो उसे लम्बी सांसों से अंदर की ओर खींचें। दिन में 3-4 बार ऐसा करने से बंद नाक खुल जाती है।

आओ संस्कृत सीखें-30

■ तब तो ठीक है। तर्हि समीचीनम्।

■ ऐसा हो तो कैसा ? एवं चेत् कथम् ?

गीता- दर्शन

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः।।
(18/46)

श्रीकृष्ण कहते हैं– जिस परमेश्वर से सम्पूर्ण प्राणियों की उत्पत्ति हुई है और जिससे यह जगत व्याप्त है, उस परमेश्वर की अपने स्वाभाविक कर्मों द्वारा पूजा करके मनुष्य परमसिद्धि को प्राप्त हो जाता है।

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान है?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइए। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें- **सामान्य**- यदि आप 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **श्रेष्ठ** - यदि 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **उत्तम**- यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. भारतीय ओलंपिक संघ की पहली महिला अध्यक्ष कौन हैं?
2. पाटलीपुत्र को सर्वप्रथम किस शासक ने अपनी राजधानी बनाया था?
3. 'राजमाला' भारत के किस राज्य के इतिहास का महत्वपूर्ण स्रोत है?
4. थर्मामीटर में किस धातु का प्रयोग होता है?
5. देश के पहले अनुसूचित जाति के मुख्य सूचना आयुक्त का नाम क्या है?
6. पाण्डवों को लाक्षागृह का रहस्य किसने बताया था?
7. श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर कहाँ स्थित है?
8. नचिकेता की कथा किस उपनिषद् में है?
9. मुगल शासक औरंगजेब ने शिवाजी महाराज को कहाँ बंदी बना कर रखा था?
10. चित्तौड़ के तीसरे साके के समय मेवाड़ी सेना के सेनापति कौन थे?

उत्तर इसी अंक में...

बोधकथा

दाने मूंग के

एक संत ने अपने दो शिष्यों को मूंग के दाने दिए और कहा, ''ये मूंग हमारी अमानत हैं। ये खराब नहीं हों, यह ध्यान रखना। दो वर्ष बाद जब हम वापस आएंगे तो इन्हें ले लेंगे।''

यह कहकर संत तीर्थ यात्रा के लिए चले गए। इधर एक शिष्य ने मूंग को पूजा के स्थान पर रखा और उसकी पूजा करने लगा। दूसरे शिष्य ने मूंग के दानों को खेत में बो दिया।

दो साल बाद संत वापस आए और पहले शिष्य से अमानत वापस मांगी तो उसने मूंग का डिब्बा संत को थमाते हुए कहा, ''गुरुजी, आपकी अमानत को मैंने अपने प्राणों की तरह संभाला है।''

संत ने ढक्कन खोलकर देखा तो मूंग में कीड़े लगे पड़े थे। संत ने शिष्य को मूंग दिखाते हुए कहा, '' क्यों बेटा, इन्हीं कीड़ों की पूजा-अर्चना करते रहे इतने समय तक।'' शिष्य बेचारा शर्म से सिर झुकाए चुपचाप खड़ा रहा। अब संत ने दूसरे शिष्य को बुलवाकर कहा, ''तुम भी हमारी अमानत लाओ।'' थोड़ी देर में दूसरा शिष्य मूंग लादकर आया और हाथ जोड़कर बोला, '' गुरुजी, यह रही आपकी अमानत।''

संत बहुत प्रसन्न हुए और उसे आशीर्वाद देते हुए बोले, '' बेटा, शिक्षा का मनन कर उसको यदि तुम दैनिक आचरण में नहीं लाओगे तो उसका भी हाल मूंग जैसा हो जाएगा।''

रास्ता खोजो

टॉमी को उसके घर तक पहुँचाइए।

जीतें पुरस्कार अब दूसरी और तीसरी बार भी

बाल प्रश्नोत्तरी - 47

बाल मित्रों, 1व16 नवम्बर का संयुक्तांक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 7976582011 पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 को प्रमाण-पत्र तथा प्रथम 5 को पुरस्कृत किया जाएगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल-किशोर ही भाग ले सकते हैं। **लगातार 5 बार उत्तर सही पाए जाने पर विशेष पुरस्कार दिया जाएगा। उत्तर भेजने की अंतिम तिथि - 05 जनवरी , 2024**

1. 'देश से है प्यार तो...' यह गीत किसके द्वारा लिखा गया है?
   (क) शंकर महादेवन (ख) प्रसून जोशी (ग) एस जयशंकर (घ) जावेद अख्तर
2. राममंदिर में पहली आरती व महायज्ञ के लिए 600 किलो घी कहाँ से जा रहा है?
   (क) जोधपुर (ख) बीकानेर (ग) जयपुर (घ) बाड़मेर
3. इनमें से कोणार्क (ओडिशा) का कौन सा मंदिर विश्व प्रसिद्ध है?
   (क) मीनाक्षी मंदिर (ख) सूर्य मंदिर (ग) राजरानी मंदिर (घ) लिंगराज मंदिर
4. भविष्य पुराण में दीपावली का नामकरण किस नाम से किया गया है?
   (क) दीपमालिका (ख) दीवाली (ग) यक्षरात्रि (घ) सुख-सुत्तिका
5. भारत आज विश्व की कौन सी अर्थव्यवस्था बन गया है?
   (क) 6वीं (ख) 7वीं (ग) 5वीं (घ) 10वीं
6. शांतिश्री धुलिपुड़ी किस विश्वविद्यालय की कुलपति हैं?
   (क) राजस्थान विवि (ख) जेएनयू (ग) महर्षि दयानन्द (घ) बीएचयू
7. प्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु विज्ञान की किस शाखा से थे?
   (क) भौतिक विज्ञान (ख) जीव विज्ञान (ग) वनस्पति विज्ञान (घ) प्राणी विज्ञान
8. क्रांतिकारी विष्णु गणेश पिंगले को किस जेल में फांसी दी गई थी?
   (क) अमृतसर (ख) लाहौर (ग) दिल्ली (घ) बनारस
9. शारदा शक्तिपीठ (कश्मीर) का उल्लेख किस प्राचीन ग्रंथ में किया गया है?
   (क) राजतरंगिणी (ख) पद्मपुराण (ग) भविष्य पुराण (घ) लिंगपुराण
10. ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स में भारत को कौन सा स्थान प्राप्त हुआ है?
   (क) 15वां (ख) 25वां (ग) 40वां (घ) 30वां

वर्ग पहेली

नीचे के वर्गों में राजस्थान के दस पर्वत शिखरों के नाम दिए हुए हैं। उनके नाम खोजिए व अपनी बुद्धि का परीक्षण कीजिए

अ	गु	म	ढ़	ग	रा	ता
च	ड़ी	रु	दि	ल	वा	ड़ा
ल	हा	दा	शि	बि	ला	ली
ग	प	हि	मा	ख	ज	शे
ढ़	ग	थ	ना	घु	र	से
कि	ना	श्री	जा	य	गा	मु
प	ना	आ	बू	प	र्व	त

उत्तर : गुरु शिखर, सेर, दिलवाड़ा, जरगा, अचलगढ़, आबू पर्वत, तारागढ़, बिलाली, नाग पहाड़ी, रघुनाथगढ़

बाल प्रश्नोत्तरी-45 के परिणाम

प्राची ध्वनि गीतिका सक्षम लोकेन्द्र

1. प्राची, तारानगर, चूरू
2. ध्वनि सिंघल, गुप्तेश्वर रोड, दौसा
3. गीतिका कुमावत, युनिवर्सिटी रोड,उदयपुर
4. सक्षम चौधरी,गोगुन्दा, उदयपुर
5. लोकेन्द्र कड़वासरा,जायल,नागौर
6. हर्षित उपाध्याय, सुदर्शनपुरा, दौसा
7. पार्थ राठौड़, जवाहर सर्किल,जयपुर
8. गर्गी,हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी,अजमेर
9. हंसिका भगतासनी हाऊसिंग बोर्ड,जोधपुर
10. गरिमा अरोड़ा, रायसिंह नगर, श्रीगंगानगर

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी - 47)

(अपनी पासपोर्ट फोटो अवश्य वॉट्सएप करें)

1.( ) 2.( )3.( )4.( ) 5.( )6. ( )7.( )8.( ) 9.( )10.( )

नाम...कक्षा..........पिता का नाम..

उम्र........... पूर्ण पता..

....................पिन.................मोबाइल..

SURYA

भारत के साथ
– प्रगति के पथ पर –
अग्रसर

हमारे अनेक अत्याधुनिक उत्पादों के संग पूरा भारत एक है। हर भारतीय घर रोशनी से जगमग है। देश बदलने वालों के लिए हम नई रोशनी हैं। नए - नए कीर्तिमान कर रहे हैं। व्यवसाय जगत में दुनिया की रुझान समझते हैं। चुनौतियों को भांप लेते हैं और फिर खुद को तेजी से बदल लेते हैं। काम करने का तरीका बेहतर बना रहे हैं और अच्छे परिणाम दे रहे हैं। भारत की तरह, जो लगातार तरक्की कर रहा है, नई ऊंचाई को छू रहा है, सूर्या ने भी पिछले 5 दशकों में सफलता की जो कहानी लिखी है वह अविश्वसनीय है

सन् 1973 में शुरुआत कर सूर्या ने एक लंबा और स्वर्णिम सफर तय किया है।

I am SURYA | CELEBRATING 50 YEARS OF TRUST | DURABLE PRODUCTS | ASSURED QUALITY

CONSUMER LIGHTING

PROFESSIONAL LIGHTING

APPLIANCES

FANS

PVC PIPES

STEEL PIPES

SURYA ROSHNI LIMITED
E-mail: consumercare@surya.in | www.surya.co.in | Tel.: +91-1147108000

Toll Free No.: 1800 102 5657
/suryalighting | /surya_roshni

स्वराज्य संस्थापक
छत्रपति शिवाजी
05
आलेख एवं चित्र
ब्रजराज राजावत
शाहजी राजे ने आस-पास के मराठा सरदारों को संगठित कर संघर्ष छेड़ दिया.. पुणे व आस-पास के क्षेत्रों पर अपना अधिकार कर लिया .. पुणे गांव की जागीर शाहजी राजे के पिता मालोजी राजे की ही थी..
सुल्तान की प्रत्येक चौकी और सैनिक का अस्तित्व मिटा दो! ... यह परगना अब हमारा है.. टूट पड़ो।
300 वर्ष बाद पुणे के लोगों को सहसा ही 'स्वतंत्रता' मिली तो झूम उठे।
आज हमारे हर्ष की सीमा नहीं है.. पुणे का जन-जन आपका स्वागत करता है
उधर विद्रोह से बीजापुर का सुल्तान क्रोधित हो गया..
एक मराठा सरदार का स्वतंत्र होने का दुस्साहस ? कुचल डालो उसके विद्रोह को
शाहजी जानते थे कि यह स्वतंत्रता बड़े संकट लाएगी.. जीजाबाई गर्भ से थी.. ऐसी स्थिति में उन्हें सुरक्षित स्थान पर भेजना आवश्यक था
पुणे की विजय को बचाने का भरपूर प्रयास होगा.. किन्तु अब संघर्ष व अस्थिरता का लम्बा दौर चलेगा.. ऐसे में साथ रहना ठीक नहीं!
आपके लिए सुरक्षा की दृष्टि से शिवनेरी का किला उपयुक्त है। किलेदार शिवोजी-विश्वासराव हमारे विश्वासपात्र भी हैं
गर्भावस्था से ही विकट पहाड़ी-राहों से शिवनेरी गढ़ की ओर
मेरे लाल!..जगत में आने से पूर्व ही इस विकट पथ से परिचित हो जा!...
जब से तू मेरी कोख में आया है, मुझे यह विश्वास होने लगा है कि आततायियों का शासन तेरे द्वारा ही समाप्त होगा... देखना सह्याद्रि की यह पहाड़ियां, ये पथरीले मार्ग तेरे संघर्ष में सहयोगी होंगे।
क्रमशः

मासिक
पाथेय कण
(16 दिसम्बर, 2023)
(11 दिसम्बर को प्रकाशित, पृष्ठ 20)

आर.एन.आई पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY 202/2021-23

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY 01/2021-23

आगामी पक्ष के विशेष अवसर

1 से 15 जनवरी, 2024
(पौष कृष्ण 5 से पौष शुक्ल 5 तक)

जन्म दिवस

पौष कृष्ण 7(3जन.) - श्री माँ शारदा जयंती
3 जनवरी (1760) - वीर कट्टबोम्मन जयंती
3 जनवरी (1831) - सावित्री बाई फुले जयंती
पौष कृ.10(6 जन.) - पार्श्वनाथ जयंती (23वें तीर्थंकर)
पौष कृ.11 (7 जन.) - चन्दप्रभ जयंती (8वें तीर्थंकर)
12 जनवरी (1863) - स्वामी विवेकानन्द जयंती
15 जनवरी (1911) - स्वतंत्रता सेनानी वीरेन्द्र वीर जयंती

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि

4 जनवरी (1970) - बांध बनाने वाले हरिबाबा की पुण्यतिथि
7 जनवरी (2001) - श्री लक्ष्मण श्रीकृष्ण भिड़े की पुण्यतिथि
11 जनवरी (1966) - लाल बहादुर शास्त्री की पुण्यतिथि
11 जनवरी (1915) - सरदार सेवा सिंह का बलिदान
14 जनवरी - चालीस मुक्तों का बलिदान (मकर संक्रांति)

महत्वपूर्ण घटनाएं/ अवसर

7 जनवरी (1026) - सोमनाथ मंदिर का ध्वंस
9 जनवरी - प्रवासी भारतीय दिवस
10 जनवरी - विश्व हिन्दी दिवस
12 जनवरी - राष्ट्रीय युवा दिवस
15 जनवरी - थल सेवा दिवस

सांस्कृतिक पर्व

13 जनवरी - लोहड़ी
14 जनवरी - मकर संक्रांति, माघ बिहू (असम)

पंचांग- पौष (कृष्ण पक्ष)

युगाब्द 5125, वि.सं. 2080, शाके 1945
(27 दिसम्बर 2023 से 11 जनवरी, 2024 तक)

रसिक माधुरी जयंती-27 दिसम्बर, चतुर्थी व्रत -30 दिसम्बर, कालाष्टमी- 4 जनवरी, सफला एकादशी व्रत -7 जनवरी, भौम प्रदोष व्रत- 9 जनवरी, देवपितृकार्य अमावस्या- 11 जनवरी

ग्रह स्थिति

चन्द्रमा : 27-28 दिसम्बर को मिथुन राशि में, 29 से 31 दिसम्बर स्वराशि कर्क में, 1-2 जनवरी को सिंह राशि में, 3 से 5 जनवरी को कन्या राशि में, 6-7 जनवरी को तुला राशि में, 8-9 जनवरी को नीच की राशि वृश्चिक में तथा 10-11 जनवरी को धनु राशि में गोचर करेंगे।

पौष कृष्ण पक्ष में वक्री गुरु * व शनि यथावत क्रमशः मेष व कुंभ राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार राहु व केतु भी यथावत मीन व कन्या राशि में स्थित रहेंगे। सूर्य व शुक्र क्रमशः धनु व वृश्चिक राशि में यथावत बने रहेंगे। मंगल 27 दिसम्बर को रात 12:21 बजे वृश्चिक से धनु राशि में प्रवेश करेंगे। वक्री बुध 28 दिसम्बर को दोपहर 11:22 बजे धनु से वृश्चिक में प्रवेश करेंगे तथा 3 जनवरी को पुनः वृश्चिक से धनु राशि में सायं 5:53 बजे मार्गी होंगे।

* गुरु 31 दिसम्बर को प्रातः 8:10 बजे मेष राशि में रहते हुए मार्गी होंगे

शत शत नमन

जन्मदिवस

स्वतंत्रता सेनानी
वीर कट्टबोम्मन
3 जनवरी

(1760-1799)

पहली महिला शिक्षिका
सावित्री बाई
3 जनवरी

(1831-1891)

पुण्यतिथि

वरिष्ठ प्रचारक
श्री लक्ष्मण श्रीकृष्ण भिड़े
7 जनवरी

(1918-2001)

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक माणकचन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी, ए-10, 22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालय : पाथेय भवन, 4 मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादक- रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 16,17,18,19 व 20 दिसम्बर, 2023 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिक्षा में,